राजपूत काल में भारत पर वैदेशिक आक्रमणों का प्रभाव

संतोष कुमार*

राजपूत काल में भारत पर अनेक बार विदेशियों ने आक्रमण किये। प्रारंभ में अरबों ने आक्रमण किये, किन्तु वे विशेष सफलता प्राप्त न कर सके। अरबों के आक्रमण सातवीं तथा आठवीं शताब्दियों में हुए थे। तुर्कों के प्रारंभिक आक्रमणों का उदेश्य तो धन-सम्पति को लूटना था, किन्तु बाद में उनका उदेश्य साम्राज्यवादिता में बदल गया। तुर्कों के आक्रमणों से भारत से अत्यधिक हानि हुई क्योंकि उन्होंने न केवल यहां की धन सम्पति पर अधिकार किया वरन् हिन्दू राज्य के स्थान पर तुर्क-शासन की स्थापना की। इस प्रकार हिन्दू-राज्य का स्वतंत्र अस्तित्व ही समाप्तप्राय हो गया।

अरबों ने सातवीं शताब्दी से ही भारत पर आक्रमण करने प्रारंभ कर दिये थे क्योंकि सातवीं शताब्दी में ही अरब अचानक अत्यंत शक्तिशाली सैनिक शक्ति के रूप में उभरे थे। अरबों का अचानक शक्तिशाली हो जाना विश्व के इतिहास की एक प्रमुख घटना मानी जाती है।

अरबों के द्वितीय अभियान के समय सिन्ध का राजा दाहिर था। अरब जो एक बार असफल हो चुके थे, सिन्ध पर अधिकार करने के अवसर की प्रतीक्षा में थे। शीघ्र ही लगभग ७०८ ई० में उन्हें यह अवसर प्राप्त हो गया। ७०८ ई० में श्रीलंका से एक जहाज इराक जा रहा था, जिसमें कुछ मुसलमान महिलाएं यात्रा कर रही थीं। इस जहाज को देवल बन्दरगाह के समीप कुछ लुटेरों ने लूट लिया। सेनापति बुदेल ने समुद्री मार्ग से देवल पर आक्रमण किया, किन्तु इसको भी दाहिर के पुत्र जयसिंह ने परास्त किया तथा उसकी हत्या कर दी।

अपने दो सेनापतियों को मृत्यु का समाचार सुनकर हज्जाज ने अत्यंत क्रोधित होकर एक शक्तिशाली सेना को अपने दामाद मुहम्मद बिन् कासिम के नेतृत्व में सिन्ध पर आक्रमण करने के लिए भेजा। एक ब्राह्मण द्वारा कुछ गुप्त रहस्य उसे बताये जाने के कारण वह देवल पर अधिकार करने में सफल हो गया। अरबों ने देवल को लूटा तथा अत्यधिक अत्याचार किये। सभी वयस्क पुरूषों को या तो मौत के घाट उतार दिया गया अथवा उनको दास बनाया गया। देवल के पश्चात् कासिम के निरून नगर की ओर कूच किया जहां अधिकांश बौद्ध रहते थे। उन्होंने बिना युद्ध किये ही बिन् कासिम की अधीनता स्वीकार कर ली। दाहिर ने रावोर नामक स्थान पर बिन् कासिम का अत्यंत वीरता से सामना किया किन्तु हृदय में अचानक तीर लग जाने के कारण युद्ध के दौरान ही वह मारा गया। उसकी मृत्यु के पश्चात् दाहिर की पत्नी ने अरबों का

***शोधार्थी इतिहास विभाग, विनोबा भावे विश्वविद्यालय, हजारीबाग (झारखण्ड)**

वीरतापूर्वक सामना किया, किन्तु अपनी रक्षा करने में असमर्थ होने पर वह अन्य स्त्रियों के साथ जौहर रीति अपनाकर अग्नि में प्रवेश कर गयी।

निःसन्देह मुहम्मद बिन् कासिम एक महान सेनापति था तथा उसकी महत्वपूर्ण विजयों के कारण मुसलमानों ने भारतीय भूमि पर पहली बार पांव जमाये। दाहिर के पुत्र जयसिंह ने बिन् कासिम की मृत्यु के पश्चात् पुनः ब्राह्मणवाद पर अधिकार कर लिया। अरब खलिफा हिशाम (खलीफा सुलेमान का उत्तराधिकारी) ने जुनैद को सिन्ध का गवर्नर नियुक्त किया। जुनैद ने जयसिंह को परास्त कर बन्दी बना लिय। जुनैद ने राजस्थान तथा गुजरात के कुछ प्रदेशों पर भी अधिकार कर लिया।

अरब यद्यपि विशेष सैनिक सफलता भारत में प्राप्त न कर सके, किन्तु उनका प्रभाव तत्कालीन भारत पर पड़ा। अरब आक्रमणों का भारतीय सामाजिक व्यवस्था पर गहरा प्रभाव पड़ा। भारत के शक्तिशाली राजाओं से परास्त हो जाने के कारण अरबों को विशेष सफलता प्राप्त नहीं हुई थी, अतः उनके आक्रमणों का विशेष राजनीतिक प्रभाव नहीं हुआ। भारत पर सांस्कृतिक प्रभाव हुआ। भारत पर सांस्कृतिक प्रभाव हुआ। इसका प्रत्यक्ष प्रभाव तत्कालीन भारतीय व्यापार पर हुआ। अरब के लोगों को दशमलव की पद्धति व नक्षत्र विद्या का ज्ञान भी भारतीयों से ही हुआ।

भारतीय राजाओं की शक्ति के समक्ष वे अपनी प्रारंभिक विजयों का लाभ न उठा सके। अरबों द्वारा प्रारंभ किये गये इस कार्य को तुर्कों ने पूरा किया। ९३२ ई० में अलप्तगीन नामक एक तुर्क नेता ने गजनी में स्वतंत्र राज्य की स्थापना की थी। अलप्तगीन की मृत्यु के पश्चात् कुछ समय पर गजनी में पिरीतिगीन ने शासन किया। इसी के शासनकाल में सर्वप्रथम भारत पर आक्रमण किया गया। गजनी के सिंहासन पर ९७७ ई० में आसीन होने में भी सफल हो गया।

जयपाल ने ९८६-९८७ ई० में विशाल सेना के साथ गजनी पर आक्रमण किया, किन्तु दुर्भाग्यवश भीषण झंझावात के कारण जयपाल की सेना की अत्यधिक क्षति हुई और उसे संधि करने पर विवश होना पड़ा। सुबुक्तगीन की मृत्यु ९९७ ई० में हुई। सुबुक्तगीन ने अपना उत्तराधिकारी अपने पुत्र इस्माल को घोषित किया था, किन्तु उसके एक अन्य पुत्र महमूद ने इस्माइल को परास्त कर राज सिंहासन पर अधिकार कर लिया। महमूद एक अत्यंत कुशल सेनापति एवं योद्धा था। उसमें मनुष्य को पहचानने की अत्यधिक क्षमता थी।

महमूद ने भारत पर प्रथम आक्रमण १००० ई० में किया तथा पेशावर (आधुनिक पाकिस्तान में) के कुछ भागों पर अधिकार करके अपने देश लौट गया। महमूद ने अत्यधिक सैनिक तैयारी करने के पश्चात् १००१ ई० में पंजाब के शाही वंश के शासक जयपाल पर आक्रमण किया।

महमूद ने तत्पश्चात् १००४ ई० में भटिण्डा पर आक्रमण किया। भटिण्डा के शासक बाजीराव ने अत्यंत वीरता से महमूद का सामना किया। महमूद ने भटिण्डा में अत्यधिक अत्याचार किये व लूटपाट की।

१००८ ई० में महमूद ने पुनः आनन्दपाल पर आक्रमण किया। महमूद का सामना करने के लिए इस बार अनेक भारतीय राजाओं ने आनन्दपाल के साथ संघ बनाया। इन राजाओं में उज्जैन, ग्वालियर, कलिंग, कन्नौज, दिल्ली तथा अजमेर के राजाओं के राजाओं ने नाम प्रमुख है।

महमूद का भारत पर सबसे प्रमुख आक्रमण सोमनाथ पर हुआ। सोमनाथ के शैव मंदिर में अतुल सम्पति थी जिसे महमूद प्राप्त करना चाहता था। महमूद इस उदेश्य की पूर्ति हेतु १०२५ ई० में अन्हिलवाड़ पर आक्रमण किया। सोमनाथ पहुंच गया उसने सोमनाथ की मूर्ति तोड़ डाली तथा अपार धन संपति को लूट लिया। महमूद के आक्रमणों के विषय में प्रो० हबीब का मत है कि महमूद धर्मान्ध न था तथा भारत पर आक्रमण उसके धार्मिक उदेश्यों के कारण नहीं वरन् धन के लालच से किये थे।

मुहम्मद गोरी, गोर का रहने वाला था। गोर का पहाड़ी जिला गजनी तथा हिरात के मध्य स्थित है। ११७३ ई० में गोर के सुल्तान गियासुदीन ने अपने शाहबुदीन मुहम्मद को गजनी का सूबेदार नियुक्त किया। यद्यपि गजनी में वह स्वतंत्र रूप से शासन करता था, किनतु वह अपने भाई के प्रति भी पूर्ण वफादार रहा।

मुहम्मद गोरी, महमूद गजनवी के समान केवल लूटपाट नहीं वरन् अपने साम्राज्य की भारत में स्थापना करना चाहता था, जिसमें उसे पर्याप्त सफलता भी प्राप्त हुई। मुहम्मद गोरी की १२०६ ई० में उसके किसी शत्रु के द्वारा हत्या कर दी गयी। मुहम्मद गोरी के कोई पुत्र न था, अतः उसके पश्चात् उसके द्वारा विजित भारतीय प्रदेशों का शासक कुतुबुदीन बना जो पहले मुहम्मद गोरी का दास था।

राजपूतों के पतन में कुछ आकस्मिक उत्पन्न हुए कारणों ने भी सहयोग दिया। ९८६ ई० में जब गजनी के सुबुक्तगीन तथा जयपाल के मध्य युद्ध चल रहा था, तो एकाएक हुई भीषण वर्षा से जयपाल को बहुत क्षति पहुंची। परिणामस्वरूप जयपाल को अपमानजनक संधि करने के लिए विवश होना पड़ा। चन्दावर के युद्ध में जयचन्द की आंख में तीर लगना भी एक ऐसी ही घटना थी।

मुसलमान आक्रान्तओं को मध्य एशिया के प्रदेशों से युद्ध में रूचि रखने वाले लोगों को अपनी सेना में भर्ती करने की सुविधा मिलने के कारण भी उन्हें राजपूतों के विरूद्ध सैनिक अभियानों में सफलता मिली। उस समय भारत अपनी सम्पन्नता के लिए विश्वविख्यात था।

उपर्युक्त कारणों के परिणास्वरूप, अत्यंत वीर एवं पराक्रमी होते हुए भी राजपूत शासक अपनी व अपनी मातृभूमि की सुरक्षा न कर सके तथा शीघ्र ही भारत परतंत्रता की बेड़ियों में जकड़ गया।

सूची संदर्भ -

१. डॉ० आर०सी० मजूमदार, द स्ट्रगल फॉर एम्पारयर, पृ० ४

२. डब्ल्यू० हेग, द कैम्ब्रिज हिस्ट्री ऑफ इण्डिया, ॐ पृ० १२

३. आर०सी० मजूमदार, द स्ट्रगल फॉर एम्पारयर, पृ० ७

४. एस०आर०शर्मा, द क्रीसेण्ट इन इण्डिया, पृ० ६१

५. Dr. Dasharatha Sharma, Early Chaudhan Dynasties, P. 84

६. Dr. B.K. Majumdar, Military, System in India, P. 186

******